बम और जनरल

उम्बरटो इको

एक बार

एक अणु था.

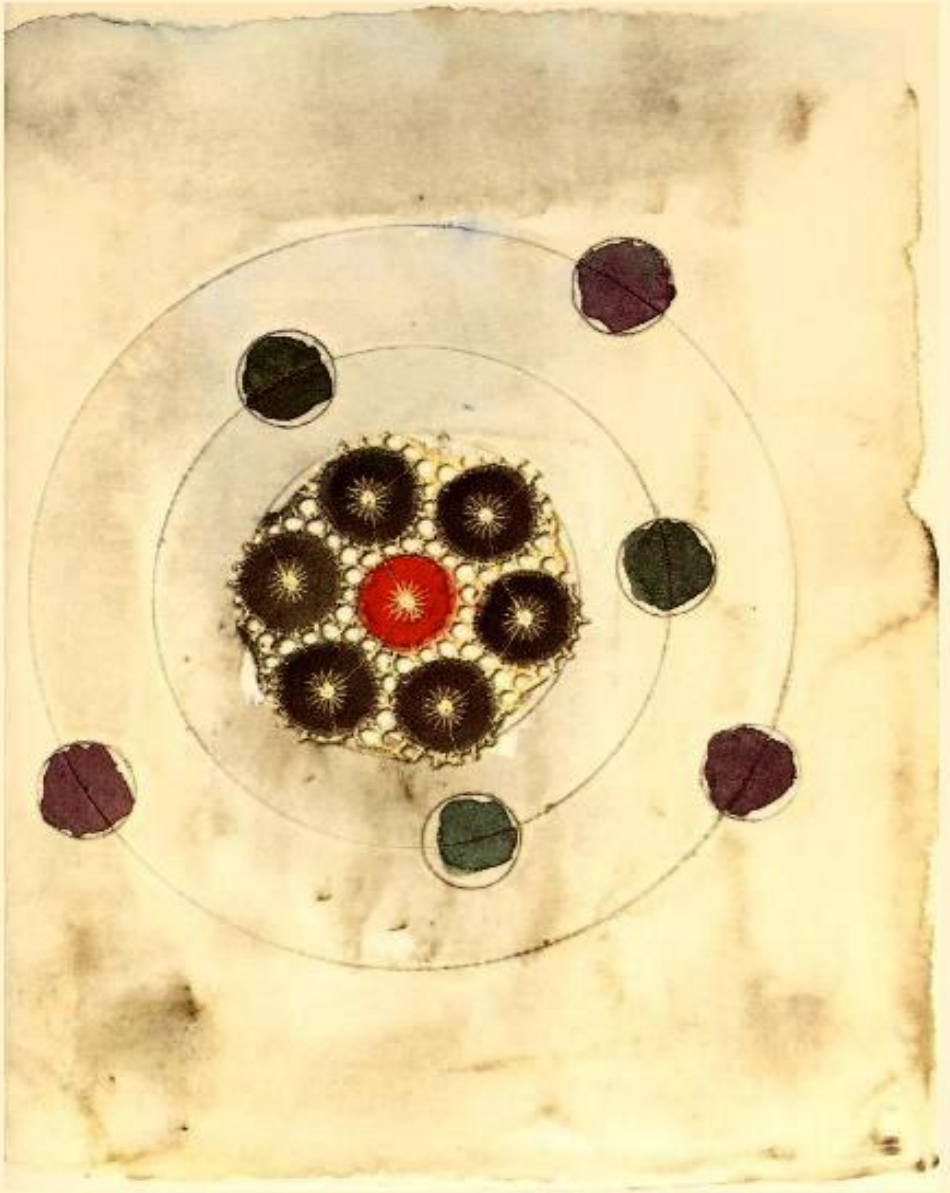

उसी ज़माने में एक दुष्ट जनरल भी था
जो सोने के धागे से बुनी वर्दी पहनता था.

दुनिया अणुओं से भरी है.

सब कुछ अणुओं से ही बना है.
अणु बहुत छोटे होते हैं,
और जब वे एक साथ आते हैं
तो वे परमाणु बनाते हैं,
जिनसे दुनिया की बाकी सब चीज़ें बनती हैं.

माँ, अणुओं की बनी हैं.
दूध, अणुओं का बना है.
महिलाएं, अणुओं से बनती हैं.
हवा भी अणुओं की बनी है.
आग भी अणुओं की बनी है.
हम सभी अणुओं से ही बने हैं.

जब अणु सुख-शांति से रहते हैं
तब सब कुछ ठीक-ठाक काम करता है.
जीवन इसी शांति पर ही तो आधारित है.

लेकिन जब अणुओं का कोई हिस्सा टूटता है
तो वो अन्य अणुओं पर प्रहार करता है
और फिर वे टुकड़े अनेकों अन्य अणुओं पर हमला करते हैं,
और उसके बाद ...

एक भयानक विस्फोट होता है!
और फिर आणविक मृत्यु होती है.

पर,
हमारा अणु बहुत उदास था
क्योंकि उसे एक अणु-बम
के अंदर डाल दिया गया था.

अन्य अणुओं के साथ
वो उस दिन का इंतजार कर रहा था
जब बम गिराया जाएगा
तब एक भयानक विस्फोट होगा
और सब कुछ नष्ट होगा.

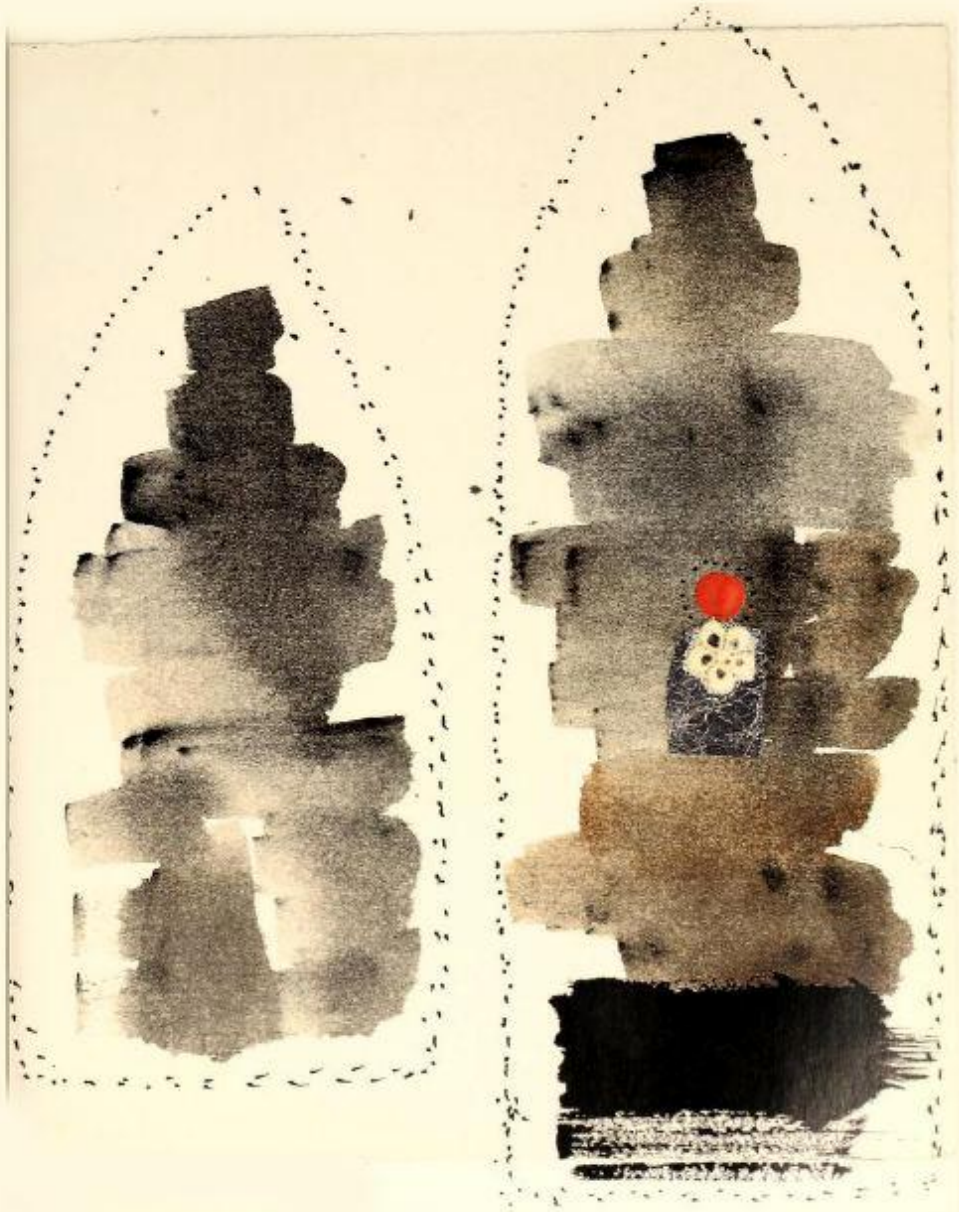

ज़िंदगी की एक और सच्चाई भी है
हमारी दुनिया, फौज के जनरलों से भी भरी है
जो बमों को इकट्ठा करने में अपनी पूरी ज़िंदगी बिताते हैं.

और हमारे जनरल ने भी,
अपने घर की अटारी को, एटम बमों से भरा.
"जब मेरे पास बहुत सारे बम हो जायेंगे," उसने कहा,
"तब मैं एक सुंदर युद्ध शुरू करूँगा!" यह कहकर वो हंस पड़ा.

जब आपके पास इतने सारे बम हों,
तो फिर आप हैवान क्यों नहीं बनेंगे?

अणु, बमों में बंद थे
वे बहुत दुखी थे.

अणुओं का बहुत शुक्रिया
उनके कारण एक भारी तबाही होने जा रही थी,
जिसमें कई बच्चे मरते,
कई माएं,
कई बिल्ली के बच्चे,
कई बछड़े,
तमाम पक्षी
और सब लोग मरते.

फिर वो पूरा शहर नष्ट हो जाता
जहां पहले कभी अनेकों छोटे-छोटे सफ़ेद घर थे
जिनकी छतों पर लाल कबेलू सजे थे
और जहाँ चारों ओर हरे-हरे पेड़ थे ...

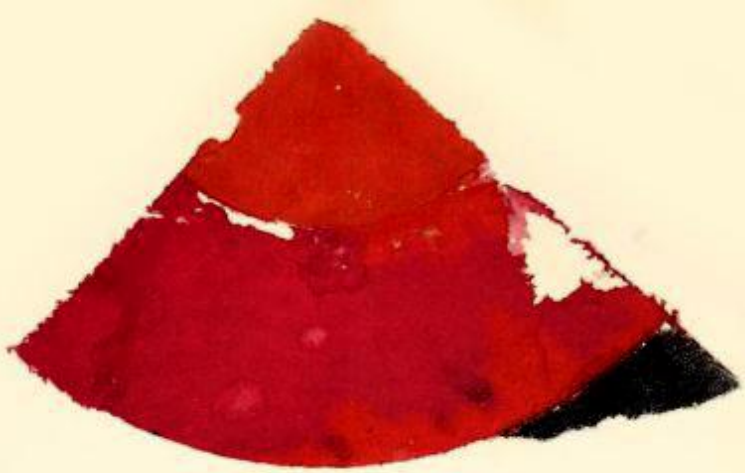

... वहां, फिर कुछ भी नहीं बचता
एक भयानक काले गड्ढे के सिवाए .....

इसलिए,
अणुओं ने विद्रोह करने का फैसला किया,
फौजी जनरल के खिलाफ.

एक रात, चुपचाप
बिना आवाज किए,
अणु, बम में से चुपचाप बाहर निकले
और नीचे तहखाने में जाकर छिप गए.

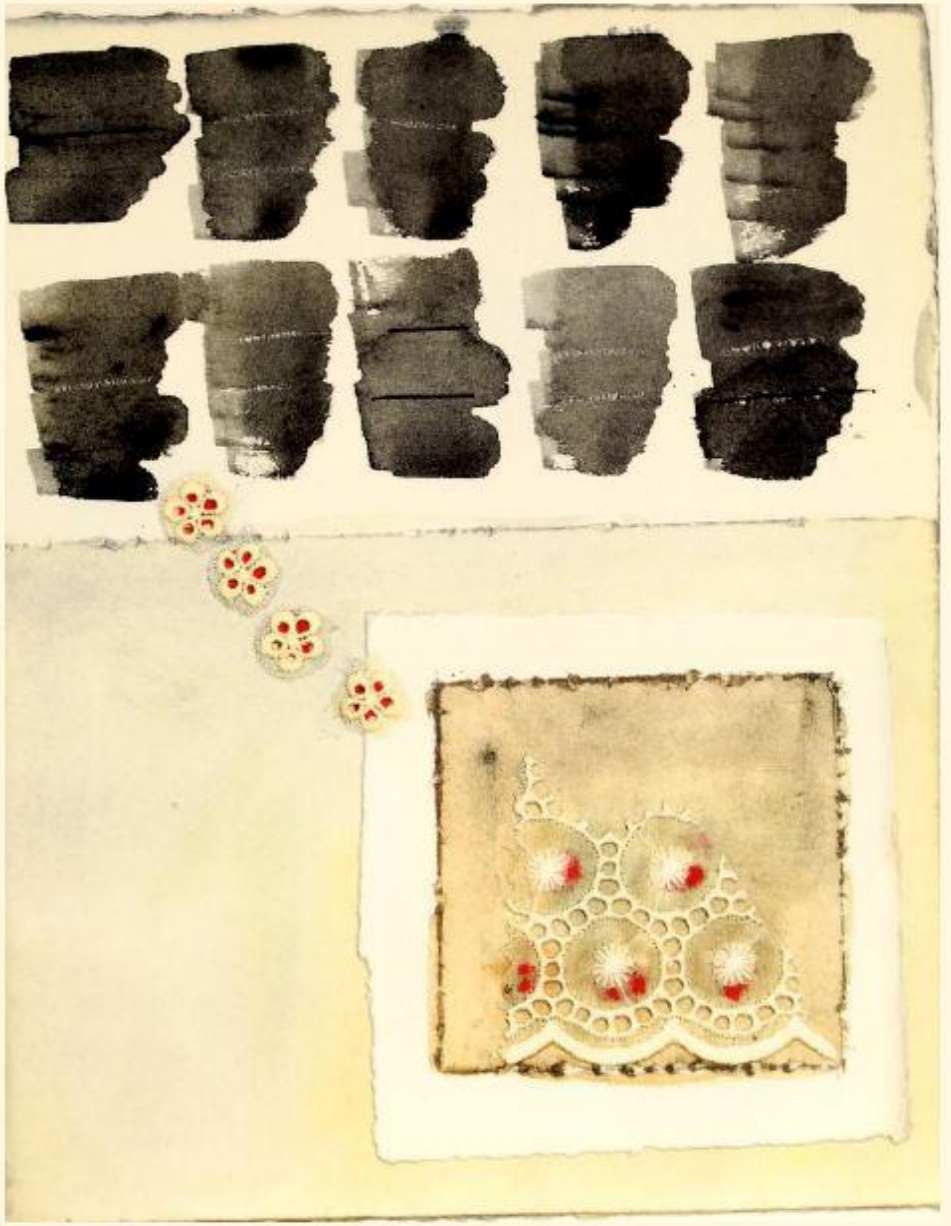

अगली सुबह
फौजी जनरल अपनी अटारी में गया.
उसके साथ कुछ और बड़े लोग भी थे.

उन लोगों ने कहा:
“हमने इन बमों को बनाने में
ढेर सारा पैसा खर्च किया है.
क्या हम इन्हें सड़ने के लिए यहीं छोड़ देंगे?
वैसे भी आप जैसे जनरल को कुछ तो करना ही चाहिए?”

"आपने सच कहा," जनरल ने जवाब दिया.
“अब हमें सच में युद्ध शुरू करना चाहिए,
नहीं तो मेरा करियर बरबाद हो जाएगा.”

उसके बाद जनरल ने युद्ध की घोषणा की.

जब परमाणु युद्ध
शुरू होने की खबर फैली
तब लोग डर से पागल हो गए:
"काश, हमने बम बनाने की तुम्हें
अनुमति ही नहीं दी होती, जनरल!"
लोगों ने कहा.

मगर अब बहुत देर हो चुकी थी.
लोग शहर छोड़कर भागे.
अब उन्हें कहाँ शरण मिलेगी?

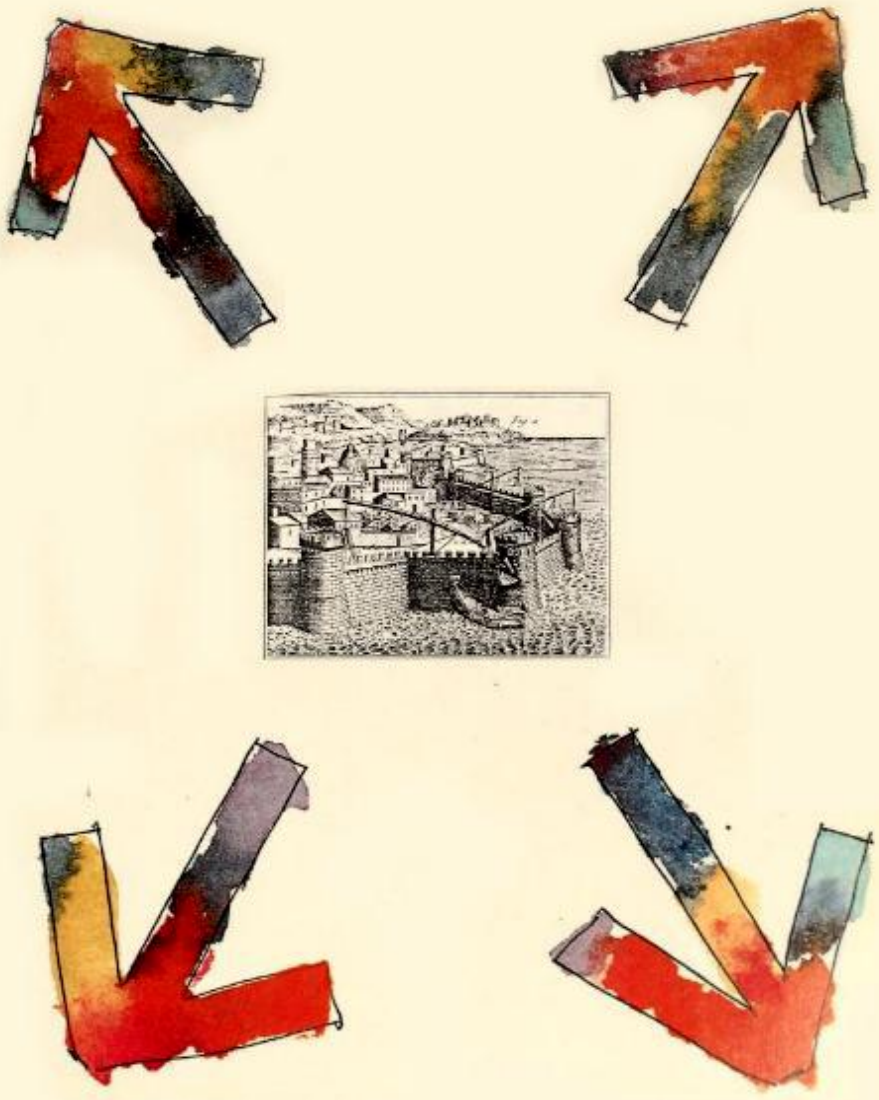

इस बीच जनरल
ने हवाई-जहाज में अपने बमों को लोड किया
और एक-एक करके उन्हें
सभी शहरों पर गिराया!

लेकिन जब बम गिरे
(तब वे खाली थे, उनमें अणु नहीं थे)
इसलिए वे बिल्कुल नहीं फटे!
लोग, बाल-बाल बचने पर खुश हुए,
(उन्हें अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हुआ!);
बमों को उन्होंने फूलों के गमलों जैसे इस्तेमाल किया.

अब लोगों को पहली बार एहसास हुआ
कि उनका जीवन बमों के बिना अधिक सुंदर था...

... और फिर लोगों ने कभी,
कोई युद्ध न करने का फैसला लिया.
अब माँ खुश थीं.
पिताजी भी.
सभी लोग खुश थे.

फिर जनरल का क्या हुआ?
क्योंकि अब युद्ध नहीं था और शांति थी
इसलिए जनरल को नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया.
सोने के धागे से बनी उसकी वर्दी के इस्तेमाल के लिए,
उसे एक होटल के दरवाज़े पर दरबान का काम दिया गया.
चूँकि अब सब लोग शांति से रहते थे,
इसलिए तमाम पर्यटक होटल में आते थे.
उनमें पुराने दुश्मन भी शामिल थे.
और कई ऐसे सैनिक भी थे जिन्हें पहले कभी
जनरल हुक्म देता था.
जब वे लोग होटल में दाखिल होते या बाहर निकलते
तो जनरल कांच के बड़े दरवाजे को खोलता
और झुककर सलाम करते हुए कहता,
"गुड डे, सर!"
(जो जनरल को पहचानते थे)
वे भी उसे टेढ़ी निगाह से देखते और कहते,
"इस होटल में सेवा का स्तर एकदम बरबाद है!
यहाँ पर रहना एक अपमान है! "

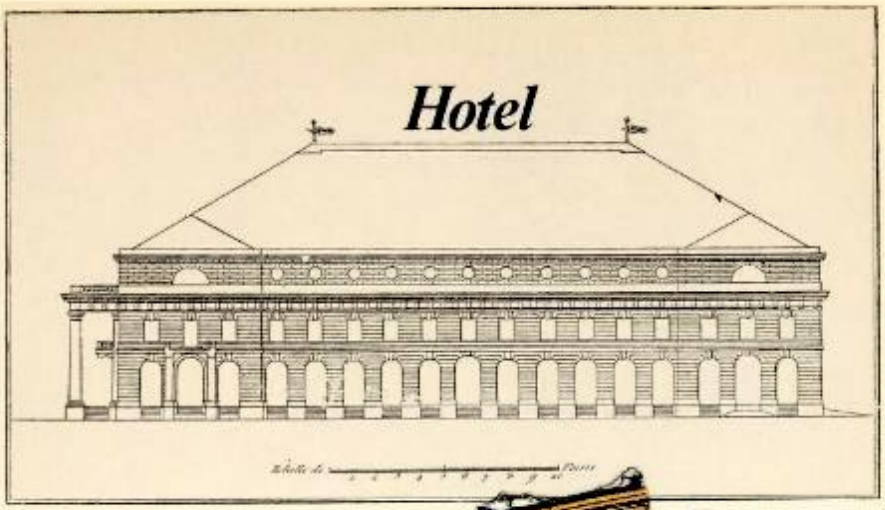

फिर जनरल

का चेहरा लाल हो जाता,

मगर वो चुप रहता.

क्योंकि अब उसका कोई महत्व नहीं था.

समाप्त